वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 392
ISBN-978-93-82071-77-8

अनन्त चतुर्दशी व्रत पूजा

–प्रस्तुति –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	भादों शु. चतुर्दशी, 18 सितम्बर 2013	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

भाद्रपद मास सभी पर्वों का राजा है, इस मास में जहाँ चातुर्मासरत दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों का सान्निध्य भक्तों को प्राप्त होता है वहीं इस मास में अनेकों व्रत, अनुष्ठान के द्वारा भव्यात्मा जीव अपने कर्मों की निर्जरा करते देखे जाते हैं। जैसे-षोडशकारण व्रत, दशलक्षण, पंचमेरु, रत्नत्रय, अनन्तचतुर्दशी, मेघमाला, श्रुतस्कंध, जिनमुखावलोकन व्रत आदि। इनमें से जन-जन में प्रचलित सर्वाधिक प्रसिद्ध अनन्तचतुर्दशी व्रत है जिसे भारत ही क्या विदेशों में रहने वाले जैन भाई-बहन भी अवश्यमेव करते हैं।

यूँ तो इन व्रतों के करने से महान पुण्य बंध होता है लेकिन अगर उसे पूर्ण शास्त्रोक्त विधिपूर्वक किया जाए तो उसकी महिमा और भी अधिक वृद्धिंगत होती है। यह बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी का परम सौभाग्य है जब हमें पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित इस कलिकाल में दक्षिण भारत के आध्यात्मिक सूर्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की शिष्या, बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, साक्षात् सरस्वती स्वरूपा परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी दिव्य विभूति की प्राप्ति हुई है जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है। जैनागम के चतुरनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर 300 अमूल्य रत्नरूप महान ग्रंथों को अपनी प्रासुक लेखनी से रचकर जिनवाणी की महान सेवा करने वाली पूज्यनीय माताजी के द्वारा रचित यह कृति ''अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा'' भी स्वयं में अमूल्य है जिसके द्वारा भव्य प्राणी आगम विधि के अनुसार अनंत व्रत करके अपने कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित हो रही यह पुस्तक जिनभक्ति के द्वारा कर्मश्रृंखला को काटने में निमित्तभूत बने, यही इस कृति के प्रकाशन की सार्थकता है।

पुस्तक के संदर्भ में.....

–आर्यिका चन्दनामती

यह ''अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा'' की पुस्तक विशेष रूप से अनन्तव्रत करने वाले भाई-बहनों के लिए अत्यंत उपयोगी है। भाद्रपद, माघ और चैत्र मास में आने वाले एक मास के सोलहकारण पर्व के अन्तर्गत शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि से चतुर्दशी तक दशलक्षण पर्व आता है तथा त्रयोदशी से पूर्णिमा तक रत्नत्रय व्रत किया जाता है और उसके मध्य आने वाली चतुर्दशी को अनन्तचतुर्दशी कहते हैं। इस अनन्तचतुर्दशी का व्रत भाद्रपद मास में प्रायः सम्पूर्ण जैन समाज में करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है अर्थात् जो बच्चे, युवा अपने जीवन में कभी भी व्रत नहीं करते हैं, उन्हें भी माता-पिता अनन्त चतुर्दशी के दिन एकाशन या उपवासपूर्वक व्रत करने को अवश्य प्रेरित करते हैं।

अनन्तचतुर्दशी व्रत की शास्त्रीय विधि कुछ विशेष ही है, जो इस पुस्तक में दी गई है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने स्वरचित अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा में सर्वप्रथम भगवान अनन्तनाथ स्तोत्र दिया है, पुनः पूजन के अंदर पंचकल्याणक अर्घ्यों के पश्चात् संस्कृत के 14 पद्य सहित अर्घ्य एवं 96 मंत्र ब्र. हीराचन्द अमोलिक कृत अनन्तव्रत पूजा से दिये हैं।

प्रतिवर्ष दशलक्षण पर्व में महाराष्ट्र प्रान्त के भक्तगण भारी संख्या में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल सान्निध्य में भाद्रपद का दशलक्षण पर्व सम्पन्न करने आते हैं। वे लोग पूरी विधि से अनन्तव्रत की पूजा करके व्रत भी करते हैं। उन भक्तों के विशेष निवेदन पर यह पुस्तक संकलित करके प्रकाशित की जा रही है।

आप सभी जिनधर्म प्रेमी श्रद्धालु इसका उपयोग करें और अपने परिणामों को पवित्र बनाकर मुक्तिपथ के पथिक बनें, यही मंगलकामना है।

श्री अनंतजिन स्तुति

हे नाथ! अनंत गुणाकर तुम, साकेत पुरी में जन्म लिया।
जयश्यामा माँ सिंहसेन पिता ने, कीर्ति ध्वजा को लहराया।।
कार्तिक वदि एकम गर्भ बसे, वदि ज्येष्ठ दुवादशि जन्मे थे।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, तप तपते वन वन घूमे थे।।1।।

चैत्री मावस में ज्ञानोत्सव, इस ही तिथि में प्रभु सिद्ध हुए।
दो सौ कर देह कनक कांति, प्रभु तीस लाख वत्सर थिति है।।
सेही लांछनयुत अंतकहर! हे देव अनंत! तुम्हें प्रणमूँ।
यह सब व्यवहार स्तुति भगवन्! निश्चय से गुण-गण को हि नमूँ।।2।।

यद्यपि ये कर्म अनादि से, मेरे संग बँधते आये हैं।
फिर भी अणुमात्र नहीं मुझमें, परिवर्तन करने पाये हैं।।
मैं सब प्रदेश में ज्ञानमयी, जड़कर्मों से क्या नाता है?
मैं हूँ चैतन्य अनंत गुणी, जड़ ही जड़ के निर्माता हैं।।3।।

यह निश्चय नय जब निश्चय से, ध्यानस्थ अवस्था पाता है।
तब कर्मों का कर्त्ता भोक्ता, नहिं होता बंध नशाता है।।
भगवन् ! तव चरण कमल सेवा, करते-करते यह फल पाऊँ।
अनुपम अनंत गुण के सागर, निज आत्मा में ही रम जाऊँ।।4।।

(अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अनंत चतुर्दशी व्रत पूजा

(इसमें 14 अर्घ्य व 96 मंत्र मराठी अनंत व्रत पूजा से लिये हैं)

अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्री अनंत जिनराज आपने, भव का अंत किया है।
दर्शन ज्ञान सौख्य वीरजगुण, को आनन्त्य किया है।।
अंतक का भी अंत करें हम, इसीलिए मुनि ध्याते।
आह्वानन कर पूजा करके, प्रभु तुम गुण हम गाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –अडिल्ल छंद

सरयूनदि को नीर कलश भर लाइये।
जिनवर पद पंकज में धार कराइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन गंध सुगंधित लाइये।
तीर्थंकर पद पंकज अग्र चढ़ाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत मुक्ता फल सम लाइये।
जिनवर आगे पुंज चढ़ा सुख पाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल कमल बेला चंपक सुमनादि ले।
मदनजयी जिनपाद पद्म पूजूँ भले।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद मोदक घृतमालपुआ लिये।
क्षुधाव्याधि क्षय हेतू आज चढ़ा दिये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति जले जगमग करे।
तुम पूजा तत्काल मोहतम क्षय करे।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर सित चंदन आदि मिलाय के।
अग्नि पात्र में खेऊँ भाव बढ़ाय के।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर आम आदिक लिये।
महामोक्षफल हेतु तुम्हें अर्पण किये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य, लिया भर थाल में।
रत्नत्रय निधि हेतु जजूँ त्रयकाल में।।

भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

श्री अनंत जिनराज के, चरणों धार करंत।
चउसंघ में भी शांति हो, समकित निधि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब ले, पुष्पांजली करंत।
मिले आत्म सुख संपदा, कटें जगत दुःख फंद।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सखी छंद–

सिंहसेन अयोध्यापति थे, जयश्यामा गर्भ बसे थे।
कार्तिक वदि एकम तिथि में, प्रभु गर्भकल्याणक प्रणमें।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां श्रीअनंतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस में, सुर मुकुट हिले जिन जन्में।
अठ एक हजार कलश से, जिन न्हवन किया सुर हरसें।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस थी, उल्का गिरते प्रभु विरती।
तप लिया सहेतुक वन में, पूजत मिल जावे तप मे।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत अमावस्या के, पीपल तरु तल जिन तिष्ठे।
केवल रवि उगा प्रभू के, मैं जजूँ त्रिजग भी चमके।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अमावस्यायां श्रीअनंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत आमावसी यम नाशा, शिवनारि वरी निज भासा।
सम्मेद शिखर को जजते, निर्वाण जजत सुख प्रगटे।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अमावस्यायां श्रीअनंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चौदह अर्घ्य

सुरनरपतिपूज्यान् बोधसंबोधितार्थान्।
त्रिगुणित - वसुसंख्यान्[1] धर्मचक्राधिनाथान्।।
[2]वसुपरिमितभास्वत्प्रातिहार्यैः समेतान्।
यजत भजत भव्याः स्वर्घ्यदानेन भक्त्या।।
इति जिनवृषभादिचतुर्दश। परमकेवलबोधविजृंभिताः।
वरविनेयजनौघनुतास्तु ते। शिवसुखाय भवंतु मयार्चिताः।।

ॐ ह्रीं वृषभादि अनंतनाथपर्यंतचतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

नव सुलक्षशराहतयोजनैः। परिमितं वरलोकसुमूर्द्धजं।
परमश्रेष्ठसुसिद्धगुणाः स्थिताः। वरमहार्घ्यमहं वितरामि तान्।
इति भवोदधिपापपराश्रिताः। परमसिद्ध गणा विविधासनाः।
अपरिमाणसुखालयतां गताः। मम दिशंतु शिवं सुखमर्चिताः।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणपूरितसिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

वरविदेहनरोत्तमजन्मनि। प्रबलशुद्धसुक्षायिकभावतः।
नरभवं प्रतिबध्य भवंति ते। कुलकरा जगदुद्धरणे क्षमाः।
मुनिवराय सुभोजनदानतः। सकलजंतुदयाप्रविधानतः।
श्रुतिविभावितनिर्मलमानसान्। सुखमवाप्य शिवं प्रतियांति ते।

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

स्वतिशयाः सुरनाथकृताः पराः। परमपुण्यप्रकर्षभवाश्च ते।
विमलतीर्थकरेषु लसंति तान्, जिनपतीन् प्रणमामि तदाप्तये।
प्रथमजन्मनि षोडश भावनां। परिविभाव्य सुक्षायिकदृष्टिनः।
परमवाप्य कुलं जिनसंभव। स्वतिशयान्परिप्राप्य विभांति ते।

ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

1. त्रि-3 × वसु-8=24। 2. वसु=8

भुवि चतुर्दश पूर्वतपोमहान्। मुनिमनोवनयोधकरान् परान्।
विपुलमुक्तिविमार्गप्रकाशकान्। जिनमुखांबुजजान् प्रयजेऽत्र तान्।
समयसारपयोनिधिपारगो। वरविनेयजनोत्करतारकः।
विगतसंख्यसुरार्चितपंकजो। जिनवरो जयतीह शिवप्रदः।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

देवेन्द्रवृंदेन समर्चिता ये। ते देवदेवा जितमोहमल्लाः।
स्वर्मुक्तिपंक्तिगुणस्थानकानां। भेदप्रभेदान् प्रवदंति संतः।
श्री शांतिनाथोऽत्र शिवं क्रियात् वः।
सभास्थितान् भव्यजनान् चिरं यः।
अर्थेन सम्यक् प्रकटीप्रकुर्वन्।
दिव्येन ध्वनिना गुणस्थानकानां।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानोपदेशकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

गतिचतुर्विधजन्मपराङ्मुखान्। विभवपंचमसद्गतिजान् वरान्।
जननमृत्युजराभयहानये। जिनपतीन् प्रयजेऽर्घ्यभरेण तान्।
इति जिनागमवर्णितमार्गणाः। परम-देवमुखाब्जविनिर्गताः।
गणधरैर्वरविस्तरिताश्च ताः। शिवसुखाय भवंतु भवान् नृणां।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणोपदेशकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

भुवि चतुर्दश जीवसमासकाः, समभिवाप्य समं भुवने स्थिताः।
विमलबोधविलोचनसाधुभिः, समधिपश्य हितान् समताधृतान्।
श्रीमज्जिनानां चरणाब्जयुग्मं। संप्रार्चयंति प्रणमंति ये ते।
राज्यं च भुक्त्वा नरनाकलोके। कर्माणि हत्वा शिवमाप्नुवंति।

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

भुवि चतुर्दशधा परमापगाः। परमसिद्धसुक्षेत्र-प्रतिष्ठिताः।
वसुविधोत्तमवस्तुमहार्घ्यकैः। परियजे शिवसंततिशर्मणे।
गंगादिसंज्ञाः सरितश्चतुर्दश। कुलाद्रिनिर्गत्य समुद्रमागताः।
मुनीन्द्रपादाब्जकरैः पवित्रिताः। अनादिसत्तीर्थजलं वहंति ताः।

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनदीस्थितजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

त्रिभुवनमिदमुच्चैर्जैनचैत्याभिराम ।
विपुलतरमधस्तात् यावदूर्ध्वं च भास्वत्।

जलधिमपतिरज्जूनां यः सो भवेच्चक्रवर्ती।
यजति जिनपतिं यः सो भवेच्चक्रवर्ती।
श्री शीतलेशैस्त्रसनालिमानं। प्रोक्तं तदूर्वं नवमं च रज्जूं।
रज्वैकमानं समविस्तरेण। जीवास्त्रसास्तत्र वसंति सर्वे।

ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्जुप्रमाणलोकस्थितजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

[1]मुनिहतयुगरत्नाधीश्वरान् नम्रपादान्।
विजितनिविडघातीन् देवदेवेन्द्रवंद्यान्।।
सलिलमलयजाद्यैर्मोक्षसंप्राप्तिहेतोः।
विमलतरमहार्घ्यैः पूजयाम्यर्हदीशान्।।
सेनापतिस्थपति हर्म्यपति द्विपार्श्व-।
स्त्री-चक्र-चर्म-मणि-काकिणिका-पुरोधाः।
छत्रासिदंडपतयः प्रणमंति यस्य।
श्रेयं जिनं तमहमत्र विधौ नमामि।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्ति वंदित जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

कोटीशतं द्वादशं चैव कोट्यो। लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यं। पंचाधिकं ग्रंथसमूहमर्च्चे।
अ इ उ ऋ ऌ समानाः शब्दशास्त्रे निबद्धाः।
अपरगुरुभिरर्घ्यास्ते दश स्युः सवर्णाः।
परमजलधि [2]दीर्घास्ते स्वरा सप्त [3]द्विघ्नाः।
जगति सकलशास्त्रे सूत्रितास्तान् भजामि।

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकवृषभादिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

भुवि चतुर्दशधा तिथिदेवताः। व्रततपोमुनिदानपवित्रिताः।
जिनवरोद्भवमंगलभाविताः। प्रवियजे जिनयज्ञशताप्तये।
विमल तीर्थकरं वरपुण्यदं। यजत भव्यजना शिवसौख्यदं।
सकलकर्मविदाहनदक्षकं। अखिलजीवदयाप्रतिपालकं।।

ॐ ह्रीं धर्मकार्यप्रसिद्ध-चतुर्दशतिथिप्रतिपादकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

श्रीमन्मुनीद्रा बलिनस्तपोभिराभ्यंतरीकोपधिभिर्विमुक्ताः।
बाह्यौपधौ मानसवृत्यभावास्तेषां पदाब्जान् सततं स्तुवेऽहम्।

1. मुनि=7 युग=(7×2=14 रत्न)। 2. जलधि (समुद्र)=4 दीर्घस्वर (ए ऐ ओ औ)।
3. सप्त-द्वि-घ्ना=(7×2=14 स्वर)

समस्तोपधीभिर्विमुक्ता मुनीन्द्रा। यथाख्यात नाम्ना गुणस्थानकस्थाः।
सुनिर्ग्रंथता-सत्पद-स्थाव्हयास्ते। मया संस्तुताः शर्मदाः संभवंतु।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलत्यक्ताहार ग्राहक मुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

पुनः क्रम से 196 गुणों का उच्चारण करते हुए पुष्प, लवंग या पीले चावल चढ़ावें।

14 तीर्थंकर के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकराय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकराय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकराय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकराय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ तीर्थंकराय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकराय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय नमः।।14।।

14 प्रकार के सिद्धों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं तपः सिद्धेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं नयसिद्धेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं संयमसिद्धेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं चरित्रसिद्धेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्रुताभ्याससिद्धेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं निश्चयात्मक भावसिद्धेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसंपन्न सिद्धेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसमेत सिद्धेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणगरिष्ठ सिद्धेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसमृद्ध सिद्धेभ्यो नमः।।14।।

14 कुलकरों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री प्रतिश्रुति मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मति मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंधर मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री शीमंकर मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री विमलवाहन मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चक्षुष्मान मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री यशस्वी मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अभिचंद्र मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्राभ मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री मरुद्देव मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नजित् मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री नाभिराज मनुसेवितजिनेभ्यो नमः।।14।।

देवकृत 14 अतिशय के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं मागधी भाषातिशयाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सर्वजीव मैत्रीभावातिशयाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं सर्वर्तु फलपुष्प प्रकाशातिशयाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं आदर्शतलसम मही मनोज्ञातिशयाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं वायुना शोधिता मही मयातिशयाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं विहरणे मंद-अनिलो वहति महातिशाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं विहरणे सर्वजीवानामानंदो भवतीति महातिशाय नमः।।7।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधांबुवृष्टि मयातिशयाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं पादन्यासे देवाः पद्मानि कल्पते अतिशयाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिशोभिता मही जायते अतिशयाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं जिनोपरिमगगनं निर्मलं भवतीति महातिशयाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं दिवि देवा परस्परमाव्हाननं कुर्वंति महातिशयाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं सर्वाण्हमस्तकोपरि धर्मचक्रं स्फुरतीति महातिशयाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं समीपे अष्टमंगल द्रव्यमहातिशयाय नमः।।14।।

14 पूर्वों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री उत्पाद पूर्वाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अग्रायणीय पूर्वाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुवाद पूर्वाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवाद पूर्वाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवाद पूर्वाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवाद पूर्वाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवाद पूर्वाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान पूर्वाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवाद पूर्वाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रवाद पूर्वाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवाद पूर्वाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशाल प्रवाद पूर्वाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकबिंदुसार प्रवाद पूर्वाय नमः।।14।।

14 गुणस्थान संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सासादन गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं मिश्र गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं देशविरत गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रमत्तगुणस्थानवर्ति योगीद्रेंभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ति योगिराजेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मलोभ गुणस्थानवर्ति मुनीन्द्रेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं उपशांतकषाय गुणस्थानवर्ति योगिनरेंद्रेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं क्षीणमोह गुणस्थानवर्ति मुनिसंघेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं सयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः।।14।।

14 मार्गणा संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं गतिमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं इंद्रियमार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं योगमार्गणा देशकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं वेदमार्गणा मृग्यकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं कषायमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं संयममार्गणा पालकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं दर्शनमार्गणा वक्तृभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं लेश्यामार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं भव्यमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं संज्ञिमार्गणा प्रतिबोधकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं आहारमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।14।।

14 जीवसमास संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रिय पर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।5।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवदया प्रतिपालकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवदयापालकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवदयापालकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव प्रतिपालकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवदया धारकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव प्रतिपालकेभ्यो नमः।।14।।

14 नदी संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता गंगा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सिंधु महानदी सत्तीर्थाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रोहित् महानदी सत्तीर्थाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रोहितास्या महानदी सत्तीर्थाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता हरित् महानदी सत्तीर्थाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता हरिकांता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सीता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सीतोदा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता नारी महानदी सत्तीर्थाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता नरकांता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सुवर्णकूला महानदी सत्तीर्थाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रूप्यकूला महानदी सत्तीर्थाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रक्ता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रक्तोदा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।14।।

14 लोक संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं निगोदस्थान स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सप्तमनरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं षष्ठ नरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं पंचम नरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्थ नरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं तृतीय नरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं नरकद्वययुत भावनालय स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं ज्योतिष्कलोक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मलोक पद स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं स्वर्ग स्वरूप कथकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं तदुपरि स्वर्गलोक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं षड्युग्म स्वर्ग स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं ग्रैवेयकादि मुक्तिपर्यंत स्वरूप ज्ञापकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं सिद्धावगाहकेभ्यो नमः।।14।।

चक्रवर्ती के 14 रत्न संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं सेनापति रत्नस्वामिसेवित जिनेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं स्थपति रत्नस्वामिसेवित जिनेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं गृहपति रत्नस्वामिसेवित जिनेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं गज रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं हय रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं नारी रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं पुरोहित रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं चर्म रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं सुदर्शन रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं मणि रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं काकिणी रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं छत्र रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं खड्ग रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं दंड रत्नपतिसेवित जिनेभ्यो नमः।।14।।

14 स्वरों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं अकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं आकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं लघु इकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।3।।

ॐ ह्रीं गुरु ईकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं लघु उकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं दीर्घ ऊकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं लघु ऋकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं गुरु ॠकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं लघु ऌकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं दीर्घ ॡकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं एकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं ऐकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं ओकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं औकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।14।।

14 तिथि संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं प्रतिपदा स्वरूप निरूपक अष्टादश दोषरहिताय जिनाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं द्वितीया तिथिमाश्रित्य सागारानगार धर्मनिरूपकाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं तृतीया तिथिमाश्रित्य दर्शनादिरत्नत्रयाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्थी तिथिमाश्रित्य प्रथमानुयोगादि विद्भ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं पंचमी तिथिमुद्दिश्य पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं षष्ठी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोदितषड्द्रव्यनिरूपकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं सप्तमी तिथिमुद्दिश्य सामायिकादि संयमधारकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अष्टमी तिथिमाश्रित्य सिद्धाष्टगुणेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं नवमी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नवनयनिरूपकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं दशमी तिथिमाश्रित्य दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं एकादशी तिथिमाश्रित्य एकादशांगनिरूपकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं द्वादशी तिथिमुद्दिश्य द्वादशविध तपोधारकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशी तिथिमाश्रित्य त्रयोदशप्रकार चारित्रेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं चतुर्दशी तिथिमाश्रित्य अनंत तीर्थंकराय नमः।।14।।

आहार के 14 मलदोष रहित 14 मंत्र

ॐ ह्रीं पूय मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।1।।
ॐ ह्रीं रुधिर मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।2।।

ॐ ह्रीं पल मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।3।।
ॐ ह्रीं अस्थि मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।4।।
ॐ ह्रीं चर्म मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।5।।
ॐ ह्रीं नख मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।6।।
ॐ ह्रीं कच मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।7।।
ॐ ह्रीं मृत विकलत्रिक मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।8।।
ॐ ह्रीं सूरणादि कंद त्यक्त पिंडविशुद्धये नमः।।9।।
ॐ ह्रीं मूलमलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।10।।
ॐ ह्रीं यव गोधूमादि बीज मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।11।।
ॐ ह्रीं बदर्यादि फल मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।12।।
ॐ ह्रीं तुषकण मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।13।।
ॐ ह्रीं कुंडमलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।14।।

–जाप्य मंत्र–

(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनंतकेवलिने नमः।

(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवदो महाविज्जा महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणुपुज्जवासपे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

जयमाला

–बसंततिलका छंद–

देवाधिदेव तुम लोक शिखामणी हो।
त्रैलोक्य भव्यजन कंज विभामणी हो।।
सौ इन्द्र आप पद पंकज में नमे हैं।
साधू समूह गुण वर्णन में रमे हैं।।1।।

जो भक्त नित्य तुम पूजन को रचावें।
आनंद कंद गुणवृंद सदैव ध्यावें।।
वे शीघ्र दर्शन विशुद्धि निधान पावें।
पच्चीस दोष मल वर्जित स्वात्म ध्यावें।।2।।

निःशंकितादि गुण आठ मिले उन्हीं को।
जो स्वप्न में भि हैं संस्मरते तुम्हीं को।।
शंका कभी नहिं करें जिनवाक्य में वो।
कांक्षें न ऐहिक सुखादिक को कभी वो।।3।।

ग्लानी मुनी तनु मलीन विषे नहीं है।
नाना चमत्कृति विलोक न मूढ़ता है।।
सम्यक्चरित्र व्रत से डिगते जनों को।
सुस्थिर करें पुनरपी उसमें उन्हीं को।।4।।

अज्ञान आदि वश दोष हुए किसी के।
अच्छी तरह ढक रहें न कहें किसी से।।
वात्सल्य भाव रखते जिनधर्मियों में।
सद्धर्म द्योतित करें रुचि से सभी में।।5।।

वे द्वादशांग श्रुत सम्यग्ज्ञान पावें।
चारित्रपूर्ण धर मनपर्यय उपावें।।
वे भक्त अंत बस केवलज्ञान पावें।
मुक्त्यंगना सह रमें शिवलोक जावें।।6।।

गणधर जयादिक पचास समोसृती में।
छ्यासठ हजार मुनि संयमलीन भी थे।।
थी सर्वश्री प्रमुख संयतिका वहाँ पे।
जो एक लाख अरु आठ हजार प्रमिते।।7।।

दो लाख श्रावक चतुर्लख श्राविकाएँ।
संख्यात तिर्यक् सुरादि असंख्य गाएँ।।
उत्तुंग देह पच्चास धनू बताया।
है तीस लाख वर्षायु मुनीश गाया।।8।।

''सेही'' सुचिन्ह तनु स्वर्णिम कांति धारें।
वंदूँ अनंत जिन को बहु भक्ति धारें।।
पूजूँ नमूँ सतत ध्यान धरूँ तुम्हारा।
संपूर्ण दुःख हरिये भगवन्! हमारा।।9।।

हे नाथ! कीर्ति सुन के तुम पास आया।
पूरो मनोरथ सभी जो साथ लाया।।
सम्यक्त्व क्षायिक करो सुचरित्र पूरो।
कैवल्य 'ज्ञानमति' दे, यम पाश चूरो।।10।।

–दोहा –

तुम पद आश्रय जो लिया, सो पहुँचे शिवधाम।
इसीलिए तुम चरण में, करूँ अनंत प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा –

श्री अनंत भगवंत, नमूँ-नमूँ तुम पदकमल।
मिले भवोदधि अंत, क्रम से निजसुख संपदा।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री अनंतनाथ की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–करती हूँ तुम्हारी पूजा.....

करते हैं प्रभू की आरति, आतमज्योति जलेगी।
प्रभुवर अनंत की भक्ती, सदा सौख्य भरेगी।।
हे त्रिभुवन स्वामी, हे अन्तर्यामी।।टेक.।।

हे सिंहसेन के राजदुलारे, जयश्यामा प्यारे।
साकेतपुरी के नाथ, अनंत गुणाकर तुम न्यारे।।
तेरी भक्ती से हर प्राणी में शक्ति जगेगी,
प्रभुवर अनंत की भक्ती, सदा सौख्य भरेगी।। हे.....।।1।।

वदि ज्येष्ठ द्वादशी में प्रभुवर, दीक्षा को धारा था,
चैत्री मावस में ज्ञानकल्याणक उत्सव प्यारा था।
प्रभु की दिव्यध्वनि दिव्यज्ञान आलोक भरेगी,
प्रभुवर .....।।2।।

सम्मेदशिखर की पावन पूज्य धरा भी धन्य हुई
जहाँ से प्रभु ने निर्वाण लहा, वह जग में पूज्य कही।
उस मुक्तिथान को मैं प्रणमूँ, हर वांछा पूरेगी,
प्रभुवर .....।।3।।

सुनते हैं तेरी भक्ती से, संसार जलधि तिरते,
हम भी तेरी आरति करके, भव आरत को हरते।
''चंदनामती'' क्रम-क्रम से, इक दिन मुक्ति मिलेगी,
प्रभुवर.....।।4।।

अनन्त चौदश व्रत विधि

अनन्तव्रते तु एकादश्यामुपवासः द्वादश्यामेकभक्तं त्रयोदश्यां काञ्जिकं चतुर्दश्यामुपवासस्तदभावे यथा शक्तिस्तथा कार्यम्। दिनहानिवृद्धौ स एव क्रमः स्मर्त्तव्यः।

अर्थ–अनन्त व्रत में भाद्रपद शुक्ला एकादशी को उपवास, द्वादशी को एकाशन, त्रयोदशी को कांजी–छाछ अथवा छाछ में जौ, बाजरा के आटे को मिलाकर महेरी–एक प्रकार की कढ़ी बनाकर लेना और चतुर्दशी को उपवास करना चाहिए। यदि इस विधि के अनुसार व्रत पालन करने की शक्ति न हो तो शक्ति के अनुसार व्रत करना चाहिए। तिथि-हानि या तिथि-वृद्धि होने पर पूर्वोक्त क्रम ही अवगत करना चाहिए अर्थात् तिथि-हानि में एक दिन पहले से और तिथि- वृद्धि में एक दिन अधिक व्रत करना होता है।

विवेचन–अनन्तव्रत भादों सुदी एकादशी से आरंभ किया जाता है। प्रथम एकादशी को उपवास कर द्वादशी को एकाशन करे अर्थात् मौन सहित स्वाद रहित प्रासुक भोजन ग्रहण करे, सात प्रकार के गृहस्थों के अन्तराय का पालन करे। त्रयोदशी को जिनाभिषेक, पूजन-पाठ के पश्चात् छाछ या छाछ में जौ, बाजरा के आटे से बनाई गई महेरी–एक प्रकार की कढ़ी का आहार ले। चतुर्दशी के दिन प्रोषध करे तथा सोना, चाँदी या रेशम-सूत का अनन्त बनाये, जिसमें चौदह गाँठ लगाये।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह तीर्थंकरों के नामों का उच्चारण, दूसरी गाँठ पर सिद्धपरमेष्ठी के चौदह[1] गुणों का चिन्तन, तीसरी पर उन चौदह मुनियों का नामोच्चारण जो मति-श्रुत-अवधिज्ञान के धारी हुए हैं, चौथी पर अर्हन्त भगवान के चौदह देवकृत अतिशयों का चिन्तन, पाँचवीं पर जिनवाणी के चौदह पूर्वों का चिन्तन, छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का चिन्तन, सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप, आठवीं पर चौदह जीवसमासों का स्वरूप, नौवीं पर गंगादि चौदह नदियों का उच्चारण, दसवीं पर चौदह राजू प्रमाण ऊँचे लोक का स्वरूप, ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों[2] का, बारहवीं पर चौदह स्वरों का, तेरहवीं पर चौदह तिथियों का एवं चौदहवीं गाँठ पर आभ्यन्तर चौदह प्रकार के परिग्रह से रहित

1. तपसिद्धि, विनयसिद्धि, संयमसिद्धि, चारित्रसिद्धि, श्रुताभ्यास, निश्चयात्मक भाव, ज्ञान, बल, दर्शन, वीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व।

2. गृहपति, सेनापति, शिल्पी, पुरोहित, स्त्री, हाथी, घोड़ा, चक्र, असि (तलवार), छत्र, दण्ड, मणि, चर्म, कांकिणी। कांकिणी रत्न की विशेषता यह होती है कि इससे कठोर से कठोर वस्तु पर भी लिखा जा सकता है, इससे सूर्य के प्रकाश से भी तेज प्रकाश निकलता है।

मुनियों का चिन्तन करना चाहिए। इस प्रकार अनन्त का निर्माण करना चाहिए।

पूजा करने की विधि यह है कि शुद्ध कोरा घड़ा लेकर उसका प्रक्षाल करना चाहिए। पश्चात् उस घड़े पर चंदन, केशर आदि सुगंधित वस्तुओं का लेप करना तथा उसके भीतर सोना, चाँदी या ताँबे के सिक्के रखकर सफेद वस्त्र से ढक देना चाहिए। घड़े पर पुष्पमालाएँ डालकर उसके ऊपर थाली प्रक्षाल करके रख देनी चाहिए। थाली में अनन्त व्रत का माड़ना और यंत्र लिखना, पश्चात् चौबीसी एवं पूर्वोक्त विधि से गाँठ दिया हुआ अनन्त विराजमान करना होता है। अनन्त का अभिषेक कर चंदनकेशर का लेप किया जाता है। पश्चात् आदिनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह भगवानों की स्थापना यंत्र पर की जाती है। अष्ट द्रव्य से पूजा करने के उपरांत **'ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनन्तकेवलिने नमः'** इस मंत्र को 108 बार पढ़कर पुष्प चढ़ाना चाहिए अथवा पुष्पों से जाप करना चाहिए। पश्चात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं स अमृतवाहिने नमः'**, **अनेन मंत्रेण सुरभिमुद्रां धृत्वा उत्तमगन्धोदकप्रोक्षणं कुर्यात्'** अर्थात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं स अमृतवाहिने नमः'** इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सुरभि मुद्रा द्वारा सुगंधित जल से अनन्त का सिंचन करना चाहिए। अनन्तर चौदहों भगवानों की पूजा करनी चाहिए।

'ॐ ह्रीं अनन्ततीर्थंकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा नमः सर्वशांतिं तुष्टिं सौभाग्यमायुरारोग्यैश्वर्यमष्ट-सिद्धिं कुरु कुरु सर्वविघ्नविनाशनं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र से प्रत्येक भगवान की पूजा के अनन्तर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। **'ॐ ह्रीं हं स अनन्तकेवलीभगवान् धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर अनन्त पर चढ़ाये हुए पुष्पों की आशिका एवं **'ॐ ह्रीं अर्हन्नमः सर्वकर्मबंधनविमुक्ताय नमः स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर शांति जल की आशिका लेनी चाहिए। इस व्रत में **'ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः'** मंत्र का जाप करना चाहिए। पूर्णिमा को पूजन के पश्चात् अनन्त को गले या भुजा में धारण करे।

कथा–इसी जम्बूद्वीप के आर्यखण्डों में कौशल देश है। उसमें अयोध्या नगरी के पास पद्मखण्ड नाम का ग्राम था। उस ग्राम में सोमशर्मा नाम का एक अति दरिद्र ब्राह्मण अपनी सोमा नाम की स्त्री और बहुत सी पुत्रियों सहित रहता था। वह (ब्राह्मण) विद्याहीन और दरिद्र होने के कारण भिक्षा मांगकर उदर पोषण करता था, तो भी भरपेट खाने को नहीं पाता था।

तब एक दिन अपनी स्त्री की सम्मति से उसने सहकुटुम्ब प्रस्थान किया तो चलते समय मार्ग में शुभ शकुन हुए अर्थात् सौभाग्यवती स्त्रियाँ सन्मुख मिलीं। कुछ और आगे चला तो क्या देखता है कि हजारों नर-नारी किसी स्थान को जा रहे हैं, पूछने से विदित हुआ कि वे सब अनन्तनाथ भगवान के समवसरण में वंदना के लिए जा रहे हैं।

यह जानकर यह ब्राह्मण भी उनके पीछे हो लिया और समवसरण में गया। वहाँ प्रभु की वंदना कर तीन प्रदक्षिणा दी और नर कोठे में यथास्थान जा बैठा, जहाँ समवसरण में दिव्यध्वनि सुनकर उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई।

पश्चात् चारित्र का कथन सुनकर उसने जुआ, माँस, मद्य, वेश्यासेवन, शिकार, चोरी और परस्त्रीसेवन ये सात व्यसन त्याग किये। पंच उदुम्बर और तीन मकार त्याग ये अष्ट मूलगुण भी धारण किये। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और अतिशय लाभ इन पंच पापों का एकदेश त्यागरूप अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी ग्रहण किये। इस प्रकार सम्यक्त्व सहित बारह व्रत लिए। पश्चात् कहने लगा–

हे नाथ! मेरी दरिद्रता किस प्रकार से मिटे सो कृपा करके कहिए।

तब भगवान ने उसे अनन्त चौदस का व्रत करने को कहा। इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि भादों सुदी 11 का उपवास कर 12 और 13 को एकाशन करे अर्थात् एकाशन से मौन सहित स्वादरहित प्रासुक भोजन करे, सात प्रकार गृहस्थों के अन्तराय पाले, पश्चात् चतुर्दशी के दिन उपवास करे तथा चारों दिन ब्रह्मचर्य रखे, भूमि पर शयन करे, व्यापार आदि गृहारंभ न करे। मोहादि रागद्वेष तथा क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्यादिक कषायों को छोड़े, सोना, चाँदी या रेशम, सूत आदि का अनन्त बनाकर, इसमें प्रत्येक गाँठ पर 14 गुणों का चिन्तवन करके 14 गांठ लगाना।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ भगवान से अनन्तनाथ भगवान तक 14 तीर्थंकरों के नाम उच्चारण करे।

दूसरी गाँठ पर सिद्ध परमेष्ठी के 14 गुण चिन्तवन करे। तीसरी पर 14 मुनि जो मति, श्रुत, अवधिज्ञान युक्त हो गये हैं उनके नाम उच्चारण करे।

चौथी पर केवली भगवान के 14 अतिशय केवलज्ञान कृत स्मरण करे। पाँचवी पर जिनवाणी में जो 14 पूर्व हैं उनका चिन्तवन करे।

छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का विचार करे। सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप विचारे।

आठवीं पर 14 जीवसमासों का विचार करे, नवमीं पर गंगादि 14 नदियों का नामोच्चारण करे। दशवीं पर तीन लोक जो 14 राजू प्रमाण ऊँचा है उसका विचार करे।

ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों का चिन्तवन करे। बारहवीं पर 14 स्वर (अक्षर) का चिन्तवन करे। तेरहवीं पर चौदह तिथियों का विचार करे। चौदहवीं गाँठ पर मुनि के मुख्य 14 दोष टालकर जो आहार लेते हैं, उनका विचार करे। इस प्रकार 14 गाँठ लगाकर मेरु के ऊपर स्थापित प्रतिमा के सन्मुख इस अनन्त को रखकर

अभिषेक करे। अनन्त प्रभु की पूजन करे फिर नीचे लिखा मंत्र 108 बार जपे–

मंत्र–(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः।

मंत्र–(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवदो महाविज्जा-महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

इस प्रकार चारों दिन अभिषेक, जप और जागरण, भजन, पूजनादि करे। फिर पूनम के दिन उस अनन्त को दाहिनी भुजा पर या गले में बांधे।

पश्चात् उत्तम, मध्यम या जघन्य पात्रों में से जो समय पर मिल सकें उन्हें आहार आदि दान देकर आप पारणा करे। इस प्रकार 14 वर्ष तक करे। पश्चात् उद्यापन करे, तब 14 प्रकार के उपकरण मंदिर में देवे जैसे-शास्त्र, चमर, छत्र, चौकी आदि। चार प्रकार संघों को आमंत्रण करके धर्म की प्रभावना करे। यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे।

इस प्रकार श्रीमुख से व्रत की विधि और उत्तम फल सुनकर उन ब्राह्मण ने स्त्री सहित यह व्रत लिया तथा और भी बहुत लोगों ने यह व्रत लिया।

पश्चात् नमस्कार करके वह ब्राह्मण अपने ग्राम में आया और भाव सहित 14 वर्ष व्रत को विधियुक्त पालन करके उद्यापन किया। इससे दिनोंदिन उसकी बढ़ती होने लगी। इसके साथ रहने से और भी बहुत लोग धर्म-मार्ग में लग गये क्योंकि लोग जब उसकी इस प्रकार बढ़ती देखकर उससे इसका कारण पूछते तो वह अनन्त व्रत आदि व्रतों की महिमा और जिनभाषित धर्म के स्वरूप का कथन कह सुनाता। इससे बहुत लोगों की श्रद्धा उस पर हो जाती और वे उसे गुरु मानने लगते।

इस प्रकार वह ब्राह्मण भले प्रकार सांसारिक सुखों को भोगकर अन्त में सन्यास मरण कर स्वर्ग में देव हुआ। उसकी स्त्री भी समाधि से मरकर उसी स्वर्ग में उसकी देवी हुई। वहाँ अपनी पूर्व-पर्याय का अवधि से विचारकर धर्मध्यान सेवन करके वहाँ से चये, सो वह ब्राह्मण का जीव अनन्तवीर्य नाम का राजा हुआ और ब्राह्मणी उसकी पट्टरानी हुई।

ये दोनों दीक्षा लेकर अनन्तवीर्य तो इसी भव से मोक्ष को प्राप्त हुए और श्रीमती स्त्रीलिंग छेदकर अच्युत स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से चयकर मध्यलोक में मनुष्य भव धारण कर संयम ले मोक्ष जावेगी।

इस प्रकार एक दरिद्र ब्राह्मणी अनन्त व्रत पालकर सद्गति को पाकर उत्तमोत्तम गति को प्राप्त हुई। यदि अन्य भव्य जीव यह व्रत पालेंगे तो वे भी सद्गति पावेंगे।

सोलहकारण पूजा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–अब ना छुपाऊँगा..........

दर्शनविशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके, इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
जो सोलह भावना भाते, वे तीर्थंकर बन जाते।।
केवलि श्रुतकेवलि पद में, ऐसे स्वर्णिम क्षण मिलते।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।1।।

आह्वानन स्थापन है, पूजन का सन्निधापन है।।
पुष्पांजली समर्पण है, प्रभु चरणों में वन्दन है।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
जल का स्वर्ण कलश लेकर, धार करूँ तीर्थंकर पद।
जन्म जरा मृत्यु क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
शुद्ध सुगंधित केशर ले, जिनवर पद में चर्चूं मैं।
भव आताप मेरा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
मोती सम अक्षत लेकर, पुंज धरूँ मैं जिनवर पद।
मम आतम सुख अक्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
कुंद कमल पुष्पों को ले, जिनवर सम्मुख अर्पूं मैं।
मेरी काम व्यथा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
खाजे पूरनपोली ले, प्रभु पूजन में चढ़ाऊँ मैं।
मेरा रोग क्षुधा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।

भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
घृत का इक लघु दीपक ले, प्रभु की आरति कर लूँ मैं।
मेरा मोह तिमिर क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
गंध सुगंधित धूप लिया, प्रभू पूजन में चढ़ा दिया।
अष्टकर्म मेरे क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
सेव व आम अनार लिया, प्रभु पूजन में चढ़ा दिया।
मोक्ष मिले दुख का क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
अर्घ्य चढ़ा प्रभु पूजन की, भाव हैं ये ''चन्दनामती''।
मिले अनघ पद दुख क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–दोहा –

शांतीधारा के लिए, लिया है प्रासुक नीर।
सोलह भावन भाय के, हो जाऊँ भव तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प सुगंधित लाय।
सोलहकारण पर्व में, गुण उपवन खिल जाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो नमः।**

जयमाला

–शेरछंद –

जय जय प्रभो! दर्शनविशुद्धि भावना भाऊँ।
आत्मा को शुद्ध करके गुण के पुष्प खिलाऊँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।1।।

पहली जो है दर्शनविशुद्धि भावना कही।
अष्टांग सहित दोष रहित देती शिवमही।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।2।।

दूजी विनयसम्पन्नता सिखलाती विनय को।
अतिचार रहित शीलव्रत है पालना सबको।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।3।।

चौथी अभीक्ष्ण ज्ञान में उपयोग कराती।
संवेग भावना जगत् से राग हटाती।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।4।।

निज शक्ति के अनुसार त्याग भावना भाएँ।
शक्ती के ही अनुसार तपस्या भी बढ़ाएँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।5।।

फिर भावना जो साधु समाधी की भाते हैं।
वे निज समाधि साध मोक्ष पद को पाते हैं।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।6।।

गुरुओं की वैयावृत्ति का जो भाव बनाते।
वे भीम के समान तन की शक्ति को पाते।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।7।।

अर्हन्त-सूरि-बहुश्रुत-प्रवचन की भक्ति से।
हो जाती आतमा को प्राप्त ज्ञान शक्ति है।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।8।।

आवश्यकापरिहाणि भावना है बताती।
धार्मिक क्रिया में सावधानी रखना सिखाती।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।9।।

जिनधर्म की प्रभावना की भावना करूँ।
प्रवचन के वात्सल्य की बस कामना करूँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।10।।

इन सोलहों शुभ भावना को मन में बसाऊँ।
पूजन में ''चन्दनामती'' पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।11।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।